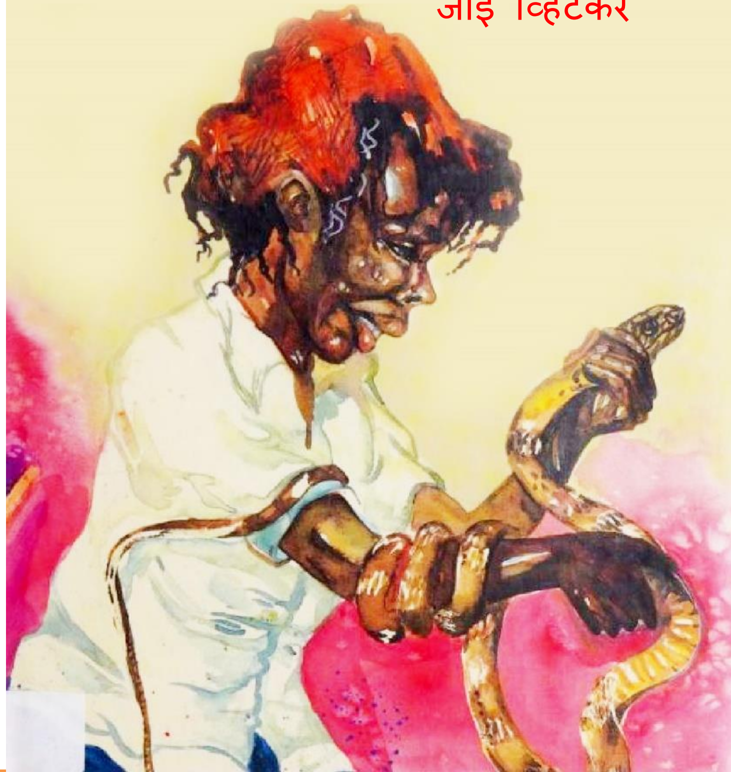
काली और रैट स्नेक

जाई व्हिटकेर



काली और रैट स्नेक



जाई व्हिटकेर

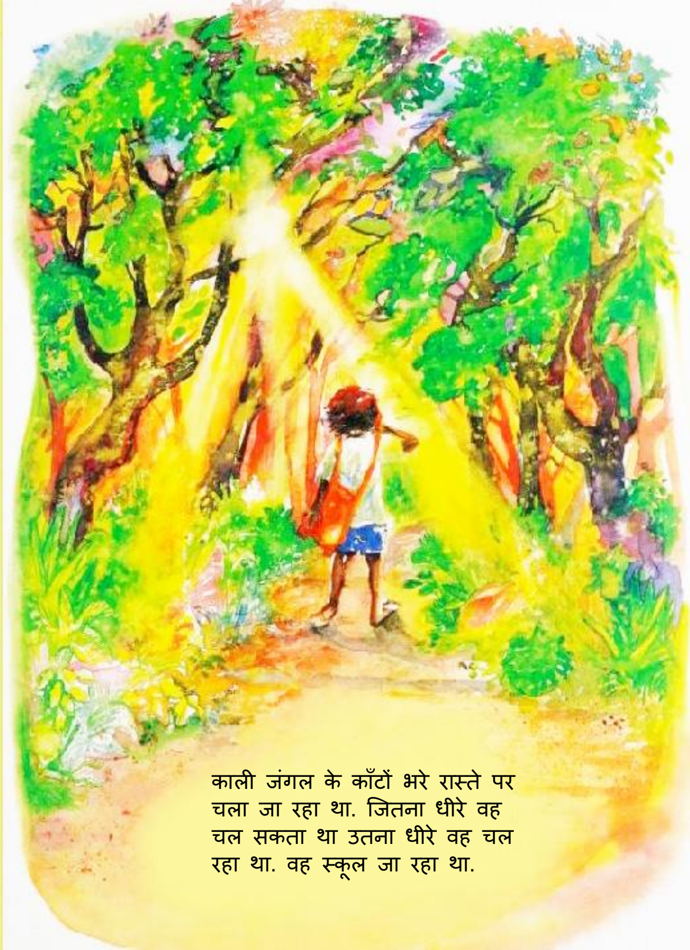




काली को स्कूल में दोस्त बनाने में कठिनाई हो रही है. वह स्कूल में नया है, अध्यापक का दुलारा है, और उसके पिता एक साँप पकड़ने वाले हैं. काली को अपने पिता पर गर्व है, उसे इरुला होने में भी गर्व है, लेकिन इसी कारण वह दूसरों से भिन्न है.

लेकिन जब एक अप्रिय अतिथि कक्षा में आ जाता है तब काली और उसके सहपाठियों को पता चलता है कि कभी-कभी अलग होना अच्छा होता है.





काली जंगल के काँटों भरे रास्ते पर चला जा रहा था. जितना धीरे वह चल सकता था उतना धीरे वह चल रहा था. वह स्कूल जा रहा था.



काली के पिता इरुला जनजाति के सबसे प्रसिद्ध साँप पकड़ने वालों में से एक थे. इसी मानसून के मौसम में उन्होंने सौ से अधिक कोबरा साँप पकड़े थे और परिवार के लिए कई अच्छी चीज़ें लेकर आए थे. साँपों की सहकारी समिति हर ज़हरीले साँप के लिए एक सौ पचास रुपए अदा करती थी. वह लोग साँपों का ज़हर निकाल कर उससे विष-रोधी दवाई बनाते थे. काली जब अपने पिता के साथ साँप पकड़ने जाता था तब टांगे किसी मशीन की तरह तेज़ चलती थीं. लेकिन स्कूल जाते समय वह बहुत धीरे हो जाती थीं.

“मुझे स्कूल पसंद नहीं है,” अपनी चलने की गति को और धीरे करते हुए उसने झाड़ियों से कहा. “और स्कूल भी मुझे पसंद नहीं करता.” झाड़ियाँ न उसकी बात समझीं और न ही उनको उसके लिए कोई अफसोस हुआ. “दो महीने हो गए हैं मुझे स्कूल जाते हुए और मेरा एक भी मित्र नहीं बना. शायद अन्य बच्चे सोचते हैं कि इरुला लोग थोड़े अजीब होते हैं.”

स्कूल में पहले दिन ही हर बच्चे को खड़े हो कर सारी कक्षा को अपने बारे में तीन बातें बतानी थीं: अपना नाम, अपने गाँव का नाम और पिता क्या काम करते थे. "मेरा नाम रामू है, मेरे गाँव का नाम मेलूर है और मेरे पिता बस कंडक्टर हैं."



फिर दूसरे ने कहा, "सैल्वी, ओराथूर, डाकिया."



जब काली की बारी आई तो उसने गर्व के साथ कहा, "मेरा नाम काली है, मेरे गाँव का नाम कलाथूर है और मेरे पिता एक साँप पकड़ने वाले हैं." उसकी बात सुनकर बच्चे हँसने लगे और एक दूसरे को कोहनी से छूकर इशारे करने लगे जैसे कि उसने कोई मूर्खता भरी बात कही थी.

जीवन में पहली बार काली को इरुला होने में गर्व महसूस नहीं हुआ. उसने कामना की कि वह भी अन्य बच्चों जैसा होता, एक साधारण लड़का, जिसके पिता एक बस कंडक्टर होते.



यह दो माह पुरानी बात थी. काली को अब इन बातों की आदत हो रही थी लेकिन अभी भी उसे स्कूल अच्छा न लगता था और उसकी चाल धीमी और धीमी होती गई.



जैसे ही स्कूल की घंटी बजी काली
स्कूल के फाटक के पास पहुँच गया.

हमेशा की तरह वह आखिरी कतार में अकेले बैठ गया. उसने सोचा कि काश उसके दोस्त होते. उसने कामना की कि वह फेल हो जाता और उसे स्कूल से निकाल दिया जाता. यद्यपि फेल होना सरल न था. वह कितना भी खराब काम करने का प्रयास करता, अध्यापक उसके काम से सदा प्रसन्न होते.



आज सुबह उन्हें गणित और लिखने का काम करना था. फिर अवकाश का समय था. नाश्ता करने के लिए बच्चे कक्षा से बाहर भागे. कुछ इडली लाए थे, कुछ के पास ब्रैड या दो-तीन बिस्कुट या नमकीन था. काली ने अपना डिब्बा खोला. ओह, नहीं, तले हुए दीमक! सच में उसका मन-पसंद खाना. लेकिन अगर किसी ने देख लिया तो?

उसे छिपकर खाना होगा. वह दीवार पर बैठ गया, सबसे दूर, और उसने चुपचाप तले हुए दीमक खाए. लेकिन काली चिंतित था, “मान लो, अगर कोई मेरे निकट आ गया? मान लो अगर किसी ने पूछ लिया कि खाने के लिए मैं क्या लाया हूँ?”





घंटी बजी. अवकाश समाप्त हो गया था. वही अध्यापक कक्षा में आए पर अब वह एक अलग विषय, इंग्लिश, पढ़ाने वाले थे.

बच्चों को इंग्लिश की वर्णमाला अपनी स्लेटों पर लिखनी थी. एक छड़ी पकड़े अध्यापक कक्षा में घूम रहे थे. जो कोई भी गलती करता उसके हाथ पर वह छड़ी से मारते.

"भाग्य साथ दे रहा है," काली ने सोचा. सौभाग्य से वह अध्यापक को परेशान कर सकता था. अपनी स्लेट गंदी करने का वह प्रयास करेगा, उसने सोचा.

अध्यापक काली के सामने खड़े थे. लेकिन छड़ी की मार के बजाय उसे शाबाशी मिली. अध्यापक ने उसकी पीठ थपथपाई. अध्यापक ने उसकी स्लेट सब बच्चों का दिखाई. "यह देखो! इस तरह का लिखाई मैं हर बच्चे से देखना चाहता हूँ," अध्यापक ने कहा.

अब बच्चे उससे पहले से अधिक घृणा करेंगे. काली को कक्षा में फुसफुसाने की आवाज़ सुनाई दी. स्कूल में उसका कोई मित्र न बनेगा.

तभी कमरे में कुछ हुआ. आरंभ में काली को कुछ समझ न आया. हाथ-पाँव पटकते हुए बच्चे इधर-उधर भागने लगे, कुछ ज़मीन पर जा गिरे, कुछ दूसरों पर गिरे. हर ओर बच्चे चिल्ला रहे थे, "मदद करो! मदद करो!" लेकिन अध्यापक स्वयं अपने डेस्क के नीचे छिपे थे. कई आँखें और कई हाथ छत की ओर संकेत कर रहे थे. अब काली को समझ आया.



छत पर एक विशाल रैट स्नेक था. शायद वह छत की टाइलों में छिपे चूहे पकड़ने आया था. लेकिन वह भूल से छत के ऊपर जाने के बजाय कमरे के अंदर आ गया था.

काली के पिता ने उसे बताया था कि कभी-कभी साँप भूल से आदमी की गंध को चूहे की गंध समझ लेते थे. शायद इस साँप ने भी सोचा होगा, “अरे वाह, यहाँ कमरा-भर चूहे हैं.”

रैट स्नेक छत की एक शहतीर से लिपटा हुआ था. कक्षा में हो रहे शोर से वह हैरान हो गया होगा. धीरे-धीरे वह शहतीर से अलग होने लगा. ऊपर देखते हुए काली तुरंत समझ गया कि क्या होने वाला था. और वैसा ही हुआ.



धप! रैट स्नेक नीचे आ गिरा. कमरे में अफरातफरी मच गई, बच्चे और ज़ोर से चीखने-चिल्लाने लगे.



कुर्सियाँ टकराईं, सिर टकराए, शरीर दीवारों से और फर्श से और एक-दूसरे से टकराए. अध्यापक अब अपने डेस्क के नीचे नहीं उसके ऊपर थे और चिल्ला रहे थे, “मदद करो! बचो!”



रैट स्नेक भयभीत हो गया था. वह कमरे के एक ओर भागा, फिर दूसरी ओर. सब बच्चे डर कर विपरीत दिशा में भाग रहे थे.

कुछ पलों के लिए काली इतना हैरान हो गया था कि वह कुछ न कर पाया. उसके लोग, इरुला जनजाति के लोग, साँपों से दूर भागने के बजाए उनकी ओर भागते थे. क्या हर कोई पगला गया था? वह धीरे-धीरे उधर गया जहाँ साँप था. उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया. अचानक सब चुप हो गए. कमरे में न कोई हलचल थी, न कोई आवाज़. सब आँखें काली पर लगी थीं. छह फुट लंबा साँप घोड़े समान पीछे हुआ, उसने अपना मुँह खोला और उसने काली पर हमला किया. सौभाग्य से साँप का निशाना चूक गया.

“रैट स्नेक के काटने से भयंकर दर्द होता है,” यह विचार काली के मन में आया जब उसने साँप के सिर को पिछली तरफ से झपट कर पकड़ा. दूसरे हाथ से उसने साँप के लंबे, मज़बूत शरीर को पकड़ लिया. तुरंत ही साँप काली के शरीर पर लिपट गया.



काली ने सोचा कि वह एक बड़ा बोरा ढूँढ कर साँप को उसमें बंद कर देगा. वह उसे अपने घर अपने पिता के पास ले जाएगा. चैन्नई के निकट स्थित वंडालूर चिड़ियाघर रैट स्नेक का अच्छा मूल्य देता था. उन पैसों से उसके पिता उसकी छोटी बहन के लिए नई पोशाक खरीद सकते थे.

लेकिन यह शोर कैसा था? क्या हो रहा था? क्या कमरे में एक और साँप था? घबरा कर काली ने ऊपर देखा.

सब तालियाँ बजा रहे थे, उसकी जय-जयकार कर रहे थे और चिल्लाकर कह रहे थे, “का-ली! का-ली! धन्य-वाद!” यह बहुत आश्चर्यजनक था. काली की आँखों में प्रसन्नता के आँसू आ गए. वह मुस्कराया. तालियों की आवाज़ और ऊँची हो गई.

“तुमने हमें बचा लिया!” एक लड़के ने चिल्लाकर कहा. “तुम बहुत बहादुर हो!”

“अब आगे से तुम मेरे पास बैठा करना!”

“नहीं, मेरे साथ!”

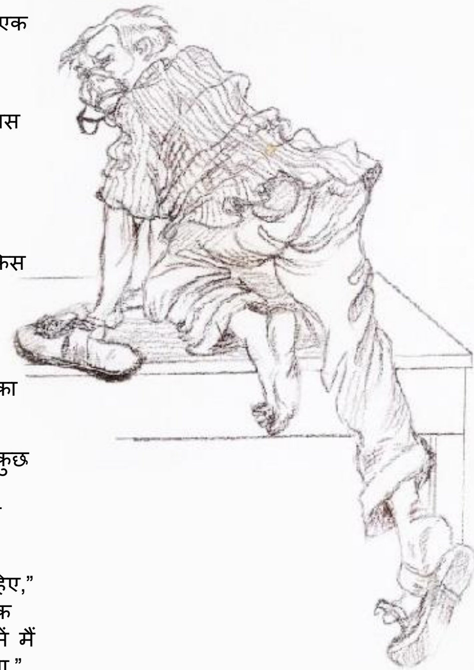
और बच्चे इस बात पर झगड़ने लगे कि काली किस के साथ बैठेगा.

“इतना बहादुर होना तुम्हें किसने सिखाया?” रमेश ने पूछा. वो कक्षा का सबसे दबंग लड़का था.

“तुम्हें क्या चाहिए? जो कुछ भी तुम्हें चाहिए वह हम लेकर आएंगे. आज तुमने हमारी जान बचाई!”

“जो चीज़ मुझे अभी चाहिए,” काली ने कहा, “वह है एक बोरा-एक बड़ा बोरा जिसमें मैं इस साँप को बंद कर दूंगा.”

बोरा ढूँढने के लिए दस बच्चे दस अलग दिशाओं में भागे. बाकी बच्चे श्रद्धा से काली को देख रहे थे. अपनी आँखों के कोनों से काली ने अध्यापक को डेस्क से नीचे उतरते देखा.



वह काली के पास आए पर उन्होंने ध्यान रखा कि उसके बिलकुल निकट न आएं. "मूर्ख बच्चों," उन्होंने डांटा. "तुम सब इतना भयभीत क्यों हो गए थे? एक विषहीन साँप देखकर इस तरह भगदड़ मचाना कितना हास्यास्पद है!"

अध्यापक अपने डेस्क पर वापस चले गए. जैसे ही उनकी पीठ बच्चों की तरफ हुई, काली और अन्य बच्चे एक-दूसरे को देखकर हँसने लगे....वैसे ही जैसे मित्र आपस में हँसते हैं.